संग चले सेवन को, ए जो मोमिन खासल खास ।
इनको श्री धाम धनी बिना, और न उपजे आस ॥२०॥

उस समय जो माया को पीठ देकर इस कार्य के लिये निकले उनको फिर कभी भी माया की आस नही हुई और वे श्री जी के साथ ही चले तथा आखिरी सांस को भी श्री जी के चरणों में समर्पित किया, ऐसे ही सुन्दरसाथ को खासलखास मोमिन कहते हैं ।

(प्रकरण ३२, चौपाई १४८२)

श्री जी संग श्री बाई जी, और भट्ट गोवरधन ।
सेवा करी तन धन सों, तो हुआ साथ में धन धन ॥१॥

श्री जी के साथ श्री बाई जी चली । गोवर्धन भट्ट जो आवासी बन्दर से आये थे, उन्होंने तन, मन और धन से कुल सेवा की । इसलिये सुन्दरसाथ ने इन्हें धन्य-धन्य कहा ।

भीम भाई भली भांत सों, निकस्या तन ले धन ।
सेवा करी उमर लों, गाए प्रेम बचन ॥२॥

वेदान्ताचार्य श्री भीम भाई भट्ट जो सूरत के रहने वाले थे, बड़े आनन्द मंगल के साथ तन और धन लेकर समर्पित हुए तथा उम्र भर धनी की अखण्ड वाणी के प्रचार-प्रसार में ही जीवन समर्पित किया ।

नागजी अति नेह सों, छोड़ कुटुम्ब की आस ।
तन, मन, धन सब ले चला, पाया खिताब नाम गरीब दास ॥३॥

नाग जी भाई बड़े प्रेम के साथ कुटुम्ब परिवार को छोड़ कर तन-मन-धन से समर्पित हुआ । श्री जी ने इसकी गरीबी तथा प्रेम भाव की सेवा को देख कर इनका नाम गरीब दास रख दिया ।

स्याम भट्ट संग चल्या, रह्या केतेक दिन ।
वचन वेदान्त सुनावत, कर न सका बस मन ॥४॥

स्याम भट्ट जो भीम भाई के साथी थे एवं सूरत के रहने वाले थे, वे कुछ दिन तक तो श्री जी के साथ चले परन्तु अपने मन को वेदान्त के मिथ्या ज्ञान से न निकाल सके और श्री राज जी के चरणों में समर्पित न हो सके एवं माया में ही फंसे रह गये ।

नाहना भाई और पाखड़ी, चले श्री राज के साथ ।
आखर लों निबाहिया, जाके धनिये पकड़े हाथ ॥५॥

श्री राज जी महाराज ने अपार कृपा करके नाहना भाई और पांखड़ी भाई को माया से निकाला । ये दोनों श्री राज जी के चरणों में ऐसे समर्पित हुए कि अपना तन भी धनी के चरणों में छोड़ा ।

Nijanand App

कान जी रामी चला, ले कबीला संग ।
आखर लों निबाहिया, कोई रहा न पीछे अंग ॥६॥

कान्ह जी, रामा भाई अपने पूरे कबीले के साथ संग चले तथा अपनी आखिरी सांस भी उन्होंने श्री जी के ही चरणों में समर्पित की ।

जमुनाबाई संग चली, छोड़ कुटुम्ब परिवार ।
सेवा करी सनेह सों, जान के परवरदिगार ॥७॥

जमुना बाई, जो श्री देवचन्द्र जी की सुपुत्री थी, वे भी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को अपने धाम का धनी पहचान कर सांसारिक कुटुम्ब-कबीला छोड़ कर बड़े प्यार से सेवा के लिये साथ चली ।

छबीलदास संग चले, सेवन के सुख काज ।
बेटा जमुना का जान के, सेवा दई श्री राज ॥८॥

छबील दास जी जमुना बाई के बेटे थे । वह सेवा का सुख लेने के भाव से चल पड़े । श्री जी ने जमुना बाई जी का पुत्र जान कर उन्हें जल पिलाने की सेवा दी, जो उन्होंने आखिरी दम तक निभायी ।

कोई दिन धारा रहे आए, फेर के जाए पीछे ।
पत्रियाँ पहुंचावें साथ मों, ऐ काम इन के ॥९॥

धारा भाई खंभालिये वाले जिन्हें बिहारी जी ने धर्म से निकाल रखा था, वे भी चल पड़े । श्री जी ने उन्हें पत्रियाँ पहुंचाने की सेवा दी । श्री जी के साथ रह कर कुछ दिन उन्होंने सेवा की ।

लालबाई संग चली, स्याम बाई को ले ।
श्री बाई जी की सेवा मिने, काम जो करती ए ॥१०॥

लालबाई ने, जो लालदास जी की अर्धांगिनी थी, अपनी एक पुत्री स्याम बाई को साथ लेकर, श्री बाई जी (तेज कुंवरी) की सेवा में ही अपना जीवन बिता दिया ।

लाल दास संग चले, खाली लेकर हाथ ।
निबहे आखर लों, चले श्री राज के साथ ॥११॥

श्री लालदास जी भी उनके साथ चले । करोड़पति होने पर भी एक पैसे ने भी उनका साथ नही दिया और खाली हाथ ही चल दिए तथा आखिरी सांस तक श्री जी के चरणों में रहे ।

सुकदेव सूरत से, ले चले संग मानिक ।
अपना आपा डारिया, पहुंचे मेरते बुजरक ॥१२॥

शुकदेव और मानिक भाई दोनों मिल कर चले । श्री जी के चरणों में समर्पित तो हुए लेकिन मेड़ते तक ही साथ निभाया ।

Nijanand App

प्रेम जी अति प्रेम सों, मारग में मिले धाए ।
हाजिर रहे हजूर में, सेवा करी चित ल्याए ॥१३॥

प्रेम जी भाई बड़े प्रेम और उत्साह के साथ आकर मिले और सदा श्री जी की सेवा में हाजिर रह कर बड़े प्रेम से उनके चरणों में सेवा की ।

सूरत सेती चल के, आए पहुंचे गुजरात ।
राह खुदाए के वास्ते लड़े, मेटन को जुलमात ॥१४॥

श्री जी सब सुन्दर साथ को लेकर सूरत से चल कर अहमदाबाद पहुंचे । इस संसार में जो गुरूजन, आचार्य एवं गादी पतिज्ञान सुना कर पैसा ले रहे थे और धर्म को पैसे का ही धन्धा मान बैठे थे, ऐसे अत्याचार को मिटाने तथा जो हकीकत में सत्य मार्ग है उसे जाहिर करने के वास्ते श्री जी सुन्दर साथ को लेकर चल पड़े ।

गुजरात के बीच में, चार दिन रहे येह ।
तहाँ सेती कूच करके, सिद्धपुर पहुंचे तेह ॥१५॥

गुजरात (अहमदाबाद) में चार दिन ठहरे तथा वहां से चलकर सिद्धपुर पहुंचे ।

लछमन कबीला लेय के, पहुंचे हैं गुजरात ।
कबीला भारी भया, कही रहने की बात ॥१६॥

श्री लक्ष्मण दास जी अपना कबीला लेकर सूरत से चलकर अहमदाबाद पहुंचे । संसारी विघ्न पड़ने के कारण वे वहीं पर रह गये ।

तिस वास्ते रह्या बीच में, माया के सुख काज ।
उमर खोई तिन में, फेर सुरत करी श्री राज ॥१७॥

इसलिए सांसारिक सुख के लिए वे माया में रह गए तथा सारी उम्र माया में ही गंवाकर प्राण दे दिए।

सिद्धपुर के बीच में, रहे बाईस दिन ।
भगवान उपाध्या ने सेवा, करी अति मगन ॥१८॥

सिद्धपुर में श्री जी अपने सुन्दर साथ के साथ २२ दिन तक रहे । वहां रेवादास ने बड़े प्रेम से सेवा की ।

Nijanand App

और भगवान का, रेवादास है नाम ।
पहुंचा पालन पुर में, इनके पूरे मनोरथ काम ॥१९॥

भगवान उपाध्याय का नाम रेवादास था । वह सिद्धपुर से पालनपुर तक सेवा में लगे रहे । श्री जी ने भी तारतम के ज्ञान से उसको भी क्षर, अक्षर, अक्षरातीत का ज्ञान देकर उसकी मनोकामना पूर्ण की ।

ए तीरथ गुरू होए मिलया, कछु न हुई खबर ।
एक मोहर दे विदा कियो, फेर लालच करी ऊपर ॥२०॥

जिस प्रकार तीर्थ स्थानों पर पंडित लोग गुरू बनकर यात्रियों से मिलते हैं । वैसे ही भगवान दास भी श्री जी की सेवा में रहे । इसलिए उसे श्री जी के स्वरूप की पहचान नही हो सकी । चलते समय श्री जी ने एक मोहर देकर विदा किया । मोहर देख कर उसके मन में और लेने के लिए लालच आ गया ।

तब गोवरधन ने कह्या, करो इन सरूप की पहिचान ।
मांगो अलौकिक इन से, तुम को दे ईमान ॥२१॥

तब गोवरधन दास जी ने रेवादास से कहा कि हे भाई ! तुम इनके स्वरूप की पहचान कर कुछ अलौकिक आत्म तत्व का ज्ञान मांग लो, जिससे कि तुम्हारा जीवन भी सफल हो जाए ।

तब अरज करी भगवान ने, लगा दोऊ कदम ।
परआतम पहिचान के, जगाओ मेरी आतम ॥२२॥

तब भगवान रेवादास श्री जी के चरणों में गिर कर अर्ज करने लगा कि हे स्वामी जी ! मेरी परआतम को पहचान कर मेरी आतमा को जगाइये ।

तब चार सुकन चलते कहे, याद करो निजधाम ।
जमुना ताल घाट की, और अक्षर मुकाम ॥२३॥

तब श्री जी ने चलते समय यह उपदेश दिया कि हे भगवान रेवादास ! अपने निजघर परमधाम को याद करो । क्षर से परे अक्षर धाम है । वहां से फिर पश्चिम की ओर श्री यमुना जी और सात घाट हैं। फिर आगे निजधाम रंगमहल है जिसके दक्षिण तरफ हौज कौसर ताल आया है ।

ब्रज रास में हम थे, भी तीसरे आए इत ।
अब खेल देख पीछे फिरें, जाए लगें हम तित ॥२४॥

माया का खेल देखने के लिये हम ही लोग ब्रज और रास में आये थे । मन की चाहना पूरी न होने के कारण हम तीसरी बार यहां आये हैं । इच्छा पूरी हो जाने के बाद हम उसी परमधाम में जायेंगे ।

Nijanand App

ए बात चित धर के, फेर आए अपने ठौर ।
सोई बात दिल में रखी, काहू न कहवे और ।।२५।।

श्री जी यह उपदेश करके मेड़ते की तरफ चले । भगवान रेवादास ने श्री जी के उपदेश के अनुसार क्षर से परे अखण्ड योगमाया के ब्रह्माण्ड, उससे आगे अक्षर धाम, फिर यमुना जी, सात घाट, चांदनी चौक, सौ सीढ़ियां चढ़ कर २८ थंभ के चौक में से होकर चार चौरस हवेली को पार कर पांचवी गोल हवेली में अपने धनी का सिंहासन है जिनके चरणों में हम बैठे हैं, इसी बात को सदा अपने दिल में रख लिया तथा किसी से भी नही कहा ।

बोला नही छः मास लों, रहे केसव भट्ट सोहबत ।
तिनसों चरचा करते, एक छत्री निकला इत ।।२६।।

छः माह तक निराकार से परे के इस ज्ञान को कहा नही । एक दिन केशव भट्ट से जो उनकी सोहबत में थे, चर्चा करने के वक्त यह बताया कि एक क्षत्रिय यहां से निकले थे उन्होंने ही यह ज्ञान मुझसे कहा था ।

तिनने हमें परमोधिया, दो एक कहे बचन ।
सोई बचन हम से कहो, तिनके दो एक सुकन ।।२७।।

श्री जी के मुखारबिन्द से जो ज्ञान सुना था, उसके दो-चार शब्द ही उन्होंने केशव भट्ट जी को सुनाये थे कि उनकी आतम तड़प उठी और वे कहने लगे कि उस ज्ञान को मुझे समझाओ ।

तब दो एक सुकन, कह दिखाया धाम ।
तब केसव पहिचानिया, कहा कहों तुम्हें इस ठाम ।।२८।।

तब भगवान रेवादास जी ने अपने शब्दों में निराकार से परे योगमाया, उसके परे अक्षर धाम तथा उसके परे परमधाम है ऐसा कहा । केशवदास जी इतना ही सुन कर पहचान गये कि वे ही अक्षरातीत धाम के धनी हैं और रेवादास से कहने लगे कि वाह रे रेवादास ! अफसोस है । मैं इस समय तेरी अक्ल के बारे में क्या कहूं ।

यह तो अक्षरातीत था, तुम न करी पहिचान ।
अब मैं उतहीं जात हों, मुझे आया ईमान ।।२९।।

वे तो साक्षात् अक्षरातीत पूर्णब्रह्म थे जिनकी तुम पहचान नहीं कर सके । मैं तो अभी सीधा वहीं जाऊंगा। मुझे पूर्ण विश्वास हो गया ।

Nijanand App

ओ ऐसे ही उत से चल्या, ढूँढ़त फिरे सब ठौर ।
ढूंढ़ते दिल्ली पहुंचिया, खोज करी अत जोर ॥३०॥

श्री केशवदास जी वैसे ही वहां से चल कर ढूंढ़ते ढूंढ़ते दिल्ली पहुंचे । दिल्ली में कहां और किस जगह पर हैं यह जानने के लिए बहुत परिश्रम किया ।

रामचन्द पंसारी के इंहा से, पाई इने खबर ।
लाल दरवाजे आय मिल्या, अति आतुर होए कर ॥३१॥

दिल्ली में रामचन्द्र पंसारी एक सुन्दरसाथ थे, जिनसे यह पता चला कि श्री जी लाल दरवाजे में ठहरे हैं तो बड़ी चाहना के साथ केशवदास जी आकर श्री जी के चरणों में लगे ।

कोई दिन तहाँ रह्या, सुने सुकन सुभान ।
तारतम नीके जानिया, कछु ज्यादा भई पहिचान ॥३२॥

केशवदास जी कुछ दिनों तक श्री जी के चरणों में रहे और जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से क्षर, अक्षर, अक्षरातीत और परमधाम की वाणी सुनी तो अपने मूल सम्बन्ध और निसबत को पहचान कर कि श्री प्राणनाथ जी ही मेरे धाम के धनी हैं, तारतम लिया ।

तब लड़ने दज्जाल सों, बांधी कम्मर जोर ।
फेर आये सिद्धपुर में, किया साथ काढ़नें का सोर ॥३३॥

फिर तारतम लेने के पश्चात् केशवदास जी वापस सिद्धपुर आये और वहां माया में फंसे सुन्दरसाथ को निकालने के लिए कटिबद्ध हो गये और हर प्रकार के संकटों को सहन करने का निश्चय कर लिया।

भगवान रेवादास को नसीहत, फेर के दई इने चिन्हार ।
तिनको ल्याया साथ में, किया खबरदार ॥३४॥

सबसे पहले केशवदास जी ने भगवान रेवादास जी को ही तारतम ज्ञान की वाणी सुना कर समझाया और मूल निसबत परमधाम तथा श्री राज जी की पहचान करा कर तारतम दे दिया ।

केसवजी परमोधिया, और द्वारकादास ।
धाम लीला दिखाय दई, तब टूट गई सब आस ॥३५॥

फिर केशवदास जी ने द्वारिकादास जी और (दूसरे) केशवदास जी को अखण्ड परमधाम तथा श्री राज जी के स्वरूप की पहचान कराई । द्वारिकादास तुरन्त माया को छोड़ कर श्री जी के चरणों में पंहुच गये।

Nijanand App

ऐ भी घर को छोड़ के, गये श्री राज के पास।
दिल्ली मिने आये मिले, सेवा की दिल आस ॥३६॥

केशवदास और द्वारिकादास तुरन्त अपने घर को छोड़ कर श्री जी की सेवा में दिल्ली पहुंच गये।

दूजे केसव दास को, दई तारतम सुध।
तब लोक अलोक की, छूट गई सब बुध ॥३७॥

दूसरे केशवदास जी ने श्री जी के मुखारबिन्द से जब अखण्ड वाणी को सुना कि ये सारा ब्रह्माण्ड दुःख का घर है तथा अखण्ड परमधाम में ही केवल सुख है। इस बात की उन्हें पूरी पहचान हो गई।

त्रीकम गंगादास नें, चरचा सुनी कान।
तब ए दिल में धरके, पहुंचा ले ईमान ॥३८॥

त्रिकम, गंगादास जी ने भी जब श्री केशवदास जी से सिद्धपुर में चर्चा सुनी तो ये दोनों भी श्री जी के प्रति पूर्ण ईमान लेकर दर्शनों के लिए दिल्ली पहुंचे।

बीटल चरचा सुनके, कछुक भई पहिचान।
घर कबीला छोड़ के, पहुंचा ले ईमान ॥३९॥

विट्ठल भाई ने भी सिद्धपुर में चर्चा सुनकर कुछ पहचान की। वह भी घर कबीले और माया को छोड़ कर ईमान के साथ श्री जी के चरणों में पहुंच गये।

जब जुद्ध भया दज्जाल सों, तब बीटल उपज्या डर।
भाग चला पीठ देय के, पहुंचा अपने घर ॥४०॥

जब दिल्ली में साकुमार की आतम को जगाने के लिये औरंगजेब के दरबार में पैगाम पंहुचाने का कार्य शुरू हुआ तब विट्ठल दास डर कर श्री जी को छोड़ कर वापस अपने घर सिद्धपुर चले गये।

थाना थाप्या सिद्धपुर में, केसव भट्ट के घर।
धाम चरचा नित होवहीं, साथ रहया पकर ॥४१॥

केशवदास जी ने सिद्धपुर के अन्दर श्री निजानन्द सम्प्रदाय के श्री प्राणनाथ जी के मंदिर की अपने घर में स्थापना की। सब सुन्दरसाथ उस मंदिर में एकत्रित होकर अखण्ड परमधाम की चर्चा-वाणी का सुख लेते थे।

Nijanand App

अब सिद्धपुर से, मेरते पहुंचे धाय।
लाभानन्द जती सों, चरचा करी बनाय ॥४२॥

अब श्री जी अपने सुन्दरसाथ को लेकर सिद्धपुर से मेड़ते पंहुचे। वहां लाभानन्द जती तांत्रिक विद्या में निपुण था और अपनी विद्या के बल से किसी भी साधु-सन्त को आने ही नही देता था। तब श्री जी ने उसके साथ तन्त्र, मन्त्र और जन्त्र से भी परे पारब्रह्म हैं इस विषय पर अच्छी प्रकार से चर्चा की।

दस दिन चरचा में भये, ठौर ठौर हुओ जब बन्ध।
तब कही महातम मेरो गयो, मेरे मारग को परबन्ध ॥४३॥

श्री जी ने दस दिन तक जब उसके साथ आत्म तत्व की चर्चा की और हर विषय पर ही जब वह उत्तर नही दे सका तो सोचने लगा कि मेरा महत्व तो मिट्टी में मिल गया और मेरा चलाया हुआ मार्ग इनके सामने नही चल पायेगा अर्थात् तांत्रिक विद्या से अब काम नही चलेगा।

मारों दाब के पहाड़ में, इनको डारों उलटाय।
सब दैत्यों के मंत्र से, भाँत भाँत किये उपाय ॥४४॥

तब श्री जी और सुन्दर साथ को मार डालने के वास्ते जितने भी दैत्य, भूत-प्रेत अपने वश में कर रखे थे उनको मन्त्रों से बुला कर आदेश दिया कि बड़े बड़े पहाड़ उठा कर इन साधुओं पर गिराओं और इन्हें मार डालो।

घर परवत उठो नही, तब हार के बैठा ठौर।
पंच वासना सब देव जहाँ खड़े, तहाँ मन्त्र चले क्यों और ॥४५॥

सब दैत्य, भूत-प्रेत आज्ञा मिलते ही पहाड़ों को उठाने के लिए गए तो एक कंकरी भी वहां की हिला न सके और बुरी तरह से दुःखी होकर निराशा लेकर वापिस लौटे। ऐसी दशा में लाभानन्द हार कर बैठ गया। श्री जी कहते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! जिस तारतम ज्ञान के अन्दर श्री अक्षरातीत पूर्णब्रह्म का नाम है तथा अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनायें (शिव, सनकादिक, कबीर, शुकदेव, और विष्णु भगवान) सेवा में हाजिर खड़ी हैं, सभी देवी देव जहां हजूरी में खड़े हैं वहां इस संसार के चौदह लोक का कोई भी मन्त्र, कोई भी शक्ति नही चल सकती।

देखाऊं में डगाए के, आसन कर बैठा सुन।
खोज खोज खाली भया, ग्रह के बैठा मुन ॥४६॥

तब लाभानन्द जती ने दिल में लिया कि मैं इनको किसी भी प्रकार से गिरा दूं परन्तु उसकी कोई भी शक्ति श्री जी के सामने नही चल सकी। विद्या के सब ग्रन्थों को जब खोज-खोजकर थक गया तो मौनव्रत लेकर बैठ गया।

Nijanand App

रामचन्द आये मिले, मेरते के ठौर ।
सेवा में सामिल रहा, तब आस न रही और ॥४७॥

जब मेड़ते में इस प्रकार लाभानन्द जती का महत्व जाता रहा तो सबसे पहले रामचन्द्र अग्रवाल श्री जी की पहचान करके तथा माया को छोड़ कर उनके चरणों में आ गए ।

एक हवेली लेय के, तहां बिराजे श्री राज ।
चरचा बड़ी होवहीं, रह्या न कोई काज ॥४८॥

अब श्री जी मेड़ते में एक हवेली लेकर वहां विराजमान हुए तथा धूम धाम के साथ क्षर-अक्षर-अक्षरातीत के भेद और अखंड परमधाम की चर्चा के बिना उन्हें और कोई कार्य नही था ।

सोर पड़या सहर में, आवत सब खलक ।
घेर रहे मध माखी ज्यों, कोई आय बीच हक ॥४९॥

मेड़ते में पहली बार ही ऐसे ब्रह्मज्ञान की चर्चा जब जनता ने सुनी तो नगर में खूब लोग आने लगे और हर वक्त श्री जी के चरणों में वहां के लोग चर्चा के लिए मधुमक्खी की तरह बैठे ही रहते थे । जिनका जितना अंकूर था उन्होंने उतनी ही पहचान की और तारतम लिया ।

आया चांपसी चित सों, और आया रघुनाथ ।
छोड़ कुटुम्ब कबीला, चला श्री राज के साथ ॥५०॥

चांपसी भाई और रघुनाथ ने बड़े सोच विचार कर तारतम लिया तथा माया को छोड़ कर श्री जी के चरणों में समर्पित होकर साथ ही चल पड़े ।

अगरबारे बनियां मिनें, आया राजा राम ।
समेत कबीला आपनें, सेवा करी तमाम ॥५१॥

मेड़ते में खासलखास ब्रह्मसृष्टि राजा राम ने, जो अग्रवाल बनिया जाति में थे श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनकर अपनी मूल निसबत तथा धनी की पहचान करके कुटुम्ब कबीले सहित तारतम लेकर उम्र भर श्री जी और सुन्दरसाथ की सेवा की ।

झांझन आया साथ में, लिये कुटुम्ब परिवार ।
ल्याया ईमान अरस पर, पहुंचा परवरदिगार ॥५२॥

झांझन भाई भी राजा राम जी के साथ ही अपने कुटुम्ब-कबीले सहित चर्चा सुन कर अपनी मूल निसबत और धाम धनी की पहचान कर समर्पित हुए तथा उम्र भर सुन्दर साथ के कुल खर्चे की सेवा की ।

Nijanand App

और आया मकरन्द, और भाई मानसिंघ।
और भाई मोहन मनोहर, ए आये ईमान ले अंग ॥५३॥

मेड़ते में मकरन्द, मान सिंह और मोहन मनोहर भाई ने जब चर्चा सुनी तो पूरे ईमान के साथ श्री निजानन्द सम्प्रदाय को स्वीकार किया।

और आया सादल, और भाई नन्दराम।
और आया रिखेस्वर, दो जीवन दास नाम ॥५४॥

सादल भाई, नन्दराम भाई, ऋषेश्वर तथा जीवन दास नाम के दो सुन्दर साथ ने श्री जी के स्वरूप की पहचान करके तारतम लिया।

और आई सरूप दे, एक बाई लखमी।
और आई रंभाबाई, इनों पायी कायमी ॥५५॥

इस प्रकार मेड़ते में कुछ माताओं ने भी धाम धनी को पहचाना और चरणों में आयी। लक्ष्मी वाई, रंभावाई ने अपनी मूल निसबत को पहचाना और धनी के चरण प्राप्त किए।

जादी और कुसली, और बाई चाँद तथा मोज।
ए आई इसलाम में, करके बड़ी खोज ॥५६॥

जादी बहन, कुशली, चाँदबाई और मौजबाई ने खूब अच्छी तरह सोच-विचारकर चर्चा सुन कर श्री निजानन्द सम्प्रदाय को धारण किया।

भागबाई और तेजबाई, अनूपो राधा नाम।
बेनबाई मुरलीधर, ये दाखिल निजधाम ॥५७॥

भागबाई, तेजबाई, अनूपा, राधा, बेनवाई और मुरलीधर भी तारतम वाणी की चर्चा सुनकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए।

Nijanand App

ए आवत चरचा को, बानी सुनत श्रवन ।
खुसाल होवे मन में, सिफत सुने मोमिन ॥५८॥

ये सुन्दरसाथ नित्य ही श्री राजजी महाराज की चर्चा सुन कर अपने मन में बहुत प्रसन्न होते हैं । जब सुन्दरसाथ की महिमा सुनते हैं तो अति खुशहाल होते हैं ।

और इनकी सोहबत से, आया केतेक साथ ।
तिनके नाम ना लिखे, पर धनिये पकड़े हाथ ॥५९॥

इस प्रकार और भी बहुत सारे सुन्दर साथ हैं जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर हुई । उन्होंने भी पूरी पहचान करके तारतम लिया परन्तु उनके नाम यहां नहीं लिखे गए हैं ।

खरची पाती इनकी, पहुंचत लड़ाई मिने ।
पतली कमरी ओढ़न को, आवत थी उत सें ॥६०॥

जिस दिन से राजाराम तथा झांझन भाई दोनों ने श्री जी के स्वरूप की पहचान करके तारतम ले लिया तो वे सुन्दर साथ की जागनी के कार्य के लिए मेड़ते से लेकर पन्ना जी तक सेवा करते रहे । कुल खर्चे की सेवा इनकी ओर से थी । सुन्दर साथ के लिए कम्बल आदि की सेवा भी इन्हीं की ओर से आती थी ।

इत सब साथ में, राजा राम सिरदार ।
तारतम बानी सब में, हुआ खबरदार ॥६१॥

मेड़ते के सब सुन्दर साथ में से श्री राजाराम और झांझन भाई सेवा करके धन्य-धन्य हुए और चर्चा वाणी में भी बहुत पक्के थे ।

और मनाबाई सेवा में, रहवे खबरदार ।
पावत है दीदार को, रहे तरफ धनी निरधार ॥६२॥

मनाबाई हर समय श्री जी की सेवा में हाजिर रहती थीं । श्री जी ही मेरे धाम के धनी हैं, इस भाव से उनके दर्शन करके अपना जीवन सफल करती थीं ।

अब इन समै मेरते मिने, बड़ा जो पड़या सोर ।
चरचा और दीदार को, खलक चली आवे इन ठौर ॥६३॥

श्री जी की परमधाम की वाणी के प्रचार-प्रसार की नगर में खूब महिमा होने लगी । इसलिए श्री जी के दर्शन तथा चर्चा सुनने के लिए हर समय वहां के लोग आते रहते थे ।

Nijanand App

सुख बड़ो सब साथ को, इत उपजत है नित ।
एक मजल जो इन समै, होसी बखत क्यामत ॥६४॥

श्री जी के मुखारविन्द से अखंड परमधाम की चर्चा हर रोज सुन कर मेड़ते के सुन्दर साथ को बहुत सुख हुआ । इस समय मेड़ता में एक ऐसी अनहोनी घटना घटी जिसकी वक्त आखिरत में सब को पहचान होगी ।

ये बातें बहुत है, कहा लों कहों बनाय ।
जो इत लीला में हाजर, ए अनुभव है ताय ॥६५॥

इस विषय पर चर्चा बहुत है जो कही नहीं जा सकती । उस समय जो सुन्दरसाथ श्री जी के साथ थे, वे ही इस लीला के सुख को जानते हैं ।

सुनी बात जब जसवंत की, तब पाती लिखी दोय ।
भट्ट गोवरधन ले चले, पैगाम पहुंचावने सोय ॥६६॥

श्री जी जब मेड़ते में थे तो पता चला कि अटक के पार जसवन्त सिंह नाम का राजा धर्म पर मर मिटने वाला है । यह सुनते ही श्री जी ने दो पातियां लिखकर आवासी बन्दर वाले गोवर्धन दास को उनके पास भेजा ।

अटक पार पहुंच के, खबर दई उन जाय ।
ए अंकूर बिना क्या करें, रह्या रस न चरचा ताय ॥६७॥

गोवर्धन दास तुरन्त अटक पार जसवन्त सिंह के दरबार में पहुंचे । उसे बहुत चर्चा सुनाई लेकिन परमधाम का अंकूर न होने से उसे चर्चा में कोई रस नही लगा ।

तहाँ चार मास लगे, रहे मेरते में इन बखत ।
एक दिन बाहिर चलते, मारग खड़े तित ॥६८॥

चार महीने तक श्री जी जब मेड़ते में रहे तो एक दिन सायंकाल रास्ते में चलते हुए जब वे खड़े होकर सुन्दरसाथ का इन्तजार कर रहे थे ।

बांग मुनारे पर चढ़के, दई मुल्ला नें जब ।
कानों सुन आवाज को, दिल विचार किया तब ॥६९॥

तो उन्होंने देखा कि एक मुल्ला मस्जिद की मुनार पर चढ़ कर बांग देने लगा । बांग को सुनकर श्री जी दिल में विचार करने लगे ।

Nijanand App

ऊपर चढ़ कलमा कह्या, ला इलाह इल्लिल्लाह ।
महंमद रसूल अल्ला तिनकी, ए खबर कहे अल्लाह ।।७०।।

मस्जिद पर चढ़ कर उसने यह कलमा कहा कि ''ला इलाह इलल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह'' तो उन्होंने विचार किया कि महम्मद कौन है जो रसूल बन कर आया है ।

ला तो नाहीं को कह्या, इलाह तो है हक ।
ए अक्षर अछरातीत की, बात बड़ी बुजरक ।।७१।।

श्री जी ९ साल अरब में रहने के कारण कलमे को सुनते ही समझ गये कि ला तो नाहीं को अर्थात् क्षर को कहा है और इलाह अखण्ड अक्षर को कहा है। इस कलमे का ज्ञान तो अक्षर अक्षरातीत की पहचान कराने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण है ।

ए तो श्री देवचन्द्र जी कही, तहाँ से आये तुम ।
दूसरा तो कोई है नही, इनका कौन दावा करे बिना हम ।।७२।।

यह बात कभी सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने भी कही थी कि कुरान में हमारी सब बातें हैं तो फिर परमधाम, अक्षरातीत और अक्षर की इन बातों का दावा हम ब्रह्मसृष्टि के बिना और कौन ले सकता है अर्थात् अन्य कोई भी नही ले सकता ।

तहकीक हमारे कासिद, हम वास्ते ल्याये कलाम ।
सब खबर हमारी होयगी, ल्याये महम्मद अलेह सलाम ।।७३।।

निश्चय ही श्री राज जी महाराज ने महंमद साहब को हमारे लिए ही पैगम्बर बनाकर भेजा है और उस पैगाम में अर्थात् कुरान में हमारे परमधाम तथा श्री राज जी महाराज की पहचान की ही बातें होंगी।

महामति कहें ए साथ जी, इहाँ लों ईसा का इलम ।
अब महम्मद को मिल चला, कहों एक दीन आदम ।।७४।।

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यहां मेड़ते तक मेरे अन्दर विराजमान श्री राज जी के जोश की शक्ति के द्वारा श्री देवचन्द्र जी के द्वारा दिये हुए तारतम ज्ञान से केवल हिन्दू पक्ष के शास्त्रों की ही चर्चा हो रही थी । अब यहां से अक्षर की आतम (महंमद साहब) और असराफील ने प्रवेश किया तो पूर्ण हकी स्वरूप अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म की पाँचों शक्तियां एकत्रित हो गई। अब हिन्दू और मुसलमान को उन्हीं के ग्रन्थों से चर्चा सुना कर एक पारब्रह्म की पहचान कराने वाले श्री निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर करना सरल हो गया ।

(प्रकरण ३३, चौपाई १५५६)

Nijanand App